Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

प्राचीन भारत

(उत्तराखंड के विशेष संदर्भ सहित)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UKPM01

उत्तराखंड लोक सेवा आयोग (UKPSC)

प्राचीन भारत

(उत्तराखंड के विशेष संदर्भ सहित)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UKPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1.	**प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत**	**7–13**
1.1	पुरातात्त्विक स्रोत	8
1.2	साहित्यिक स्रोत	9
1.3	विदेशी यात्रियों के विवरण	10
2.	**पाषाणयुगीन संस्कृति**	**14–21**
2.1	प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास	14
2.2	पुरापाषाण काल : आखेटक और खाद्य संग्राहक	14
2.3	मध्यपाषाण काल : आखेटक और पशुपालक	16
2.4	नवपाषाण काल : खाद्य उत्पादक	17
2.5	उत्तराखंड में प्रागैतिहासिक काल	18
2.6	उत्तराखंड में आद्य–ऐतिहासिक काल/पौराणिक काल	18
3.	**हड़प्पा सभ्यता**	**22–39**
3.1	उद्भव एवं विस्तार	22
3.2	स्वरूप एवं विशेषताएँ	24
3.3	हड़प्पा सभ्यता का नगर नियोजन	26
3.4	हड़प्पाकालीन आर्थिक व्यवस्था	29
3.5	हड़प्पाकालीन सामाजिक जीवन	30
3.6	हड़प्पाकालीन धार्मिक जीवन	31
3.7	स्थापत्य एवं कला	32
3.8	हड़प्पा सभ्यता का पतन	33
3.9	ताम्रपाषाण युग	34
4.	**वैदिक काल**	**40–53**
4.1	ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. –1000 ई. पू.)	40
4.2	उत्तर वैदिक काल (1000 ई. पू. –600 ई. पू.)	46

5. छठी शताब्दी ई. पू. का काल (महाजनपद काल) **54–72**

5.1 धार्मिक आंदोलन: जैन धर्म व बौद्ध धर्म 54

5.2 महाजनपद तथा मगध का उत्थान 62

5.3 ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण 66

6. मौर्य साम्राज्य **73–93**

6.1 चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, अशोक 74

6.2 मौर्य साम्राज्य की प्रकृति 80

6.3 मौर्य प्रशासन 81

6.4 मौर्यकालीन समाज 84

6.5 मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था 84

6.6 मौर्यकालीन कला 86

6.7 पतन के कारण 87

7. मौर्योत्तर काल **94–107**

7.1 शुंग वंश, कण्व वंश, चेदि तथा सातवाहन वंश 94

7.2 हिंद-यवन या बैक्ट्रियाई आक्रमण 96

7.3 शक शासक 97

7.4 पह्लव वंश या पार्थियन साम्राज्य 98

7.5 कुषाण 98

7.6 मौर्योत्तरकालीन राजव्यवस्था एवं प्रशासन 99

7.7 मौर्योत्तरकालीन समाज 99

7.8 मौर्योत्तरकालीन अर्थव्यवस्था 100

7.9 मौर्योत्तरकालीन कला एवं साहित्य 102

8. संगम काल **108–114**

8.1 संगम साहित्य 109

8.2 शासन व्यवस्था 110

8.3 सामाजिक स्थिति 110

8.4 अर्थव्यवस्था 111

9. गुप्त साम्राज्य **115–130**

9.1 प्रारंभिक शासक 115

9.2 गुप्त प्रशासन 117

9.3 गुप्तकालीन समाज 118
9.4 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था 119
9.5 गुप्तकालीन साहित्य 120
9.6 कला एवं स्थापत्य 121
9.7 स्वर्णयुग की अवधारणा 123
9.8 पतन के कारण 125

10. गुप्तोत्तर काल **131–141**
10.1 प्रमुख राजवंश 131
10.2 थानेश्वर का पुष्यभूति (वर्धन) वंश 132
10.3 गुप्तोत्तरकालीन सामाजिक स्थिति 136
10.4 गुप्तोत्तरकालीन राजनीतिक व्यवस्था 137
10.5 गुप्तोत्तरकालीन अर्थव्यवस्था 137
10.6 गुप्तोत्तरकालीन धर्म 137

11. दक्षिण भारत **142–149**
11.1 चालुक्य वंश 142
11.2 पल्लव वंश 144

12. पूर्व मध्यकालीन भारत **150–164**
12.1 पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश 150
12.2 त्रिपक्षीय संघर्ष 153
12.3 चन्देल वंश (नवीं सदी से तेरहवीं सदी) 154
12.4 मालवा के परमार 155
12.5 कन्नौज के गहड़वाल 156
12.6 दिल्ली के चौहान 156
12.7 चोल राजवंश 156
12.8 भारत पर अरब आक्रमण 161

अध्याय
1

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
(Sources of Ancient Indian History)

प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन के लिये हमें साहित्य, पुरातात्त्विक साक्ष्य तथा विदेशी विवरणों की आवश्यकता होती है। इन स्रोतों के अभाव में इतिहास लेखन की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं की जा सकती है। दुर्भाग्यवश इस संबंध में उपयोगी सामग्री बहुत ही कम उपलब्ध है। प्राचीन भारतीय इतिहास में ऐसे ग्रंथों का प्रायः अभाव-सा है जिन्हें आधुनिक परिभाषा में इतिहास की संज्ञा दी जाती है। इतिहास लेखन के अपने कुछ विशिष्ट मानक होते हैं, जिनका पालन आवश्यक है। इतिहास लेखन की कुछ सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार देखी जा सकती हैं– (1) काल बोध (2) क्षेत्र बोध (3) तथ्यों का ब्यौरा एवं तथ्यों के स्रोतों का हवाला देना (4) ब्यौरों का विश्लेषण (5) पूर्वाग्रहों से मुक्त लेखन आदि।

भारतीय इतिहास के काल को तीन भागों में बाँटकर देखा जा सकता है-

1. **प्रागैतिहासिक कालः** वह काल जिसके लिये कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है और जिसमें मनुष्य का जीवन अपेक्षाकृत सभ्य नहीं था। हड़प्पा सभ्यता से पूर्व का भारतीय इतिहास इसी श्रेणी में आता है।
2. **आद्य-ऐतिहासिक कालः** भारतीय इतिहास का वह काल जिसमें लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध हैं, लेकिन वे गूढ़ लिपि में हैं और जिनका अर्थ अभी नहीं निकाला जा सका है। हड़प्पा सभ्यता की गणना इसी काल के अंतर्गत होती है।
3. **ऐतिहासिक कालः** वह काल जिसके लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं और जिसमें मनुष्य सभ्य बन गया था। लगभग 600 ई.पू. के बाद का काल **'ऐतिहासिक काल'** कहलाता है।

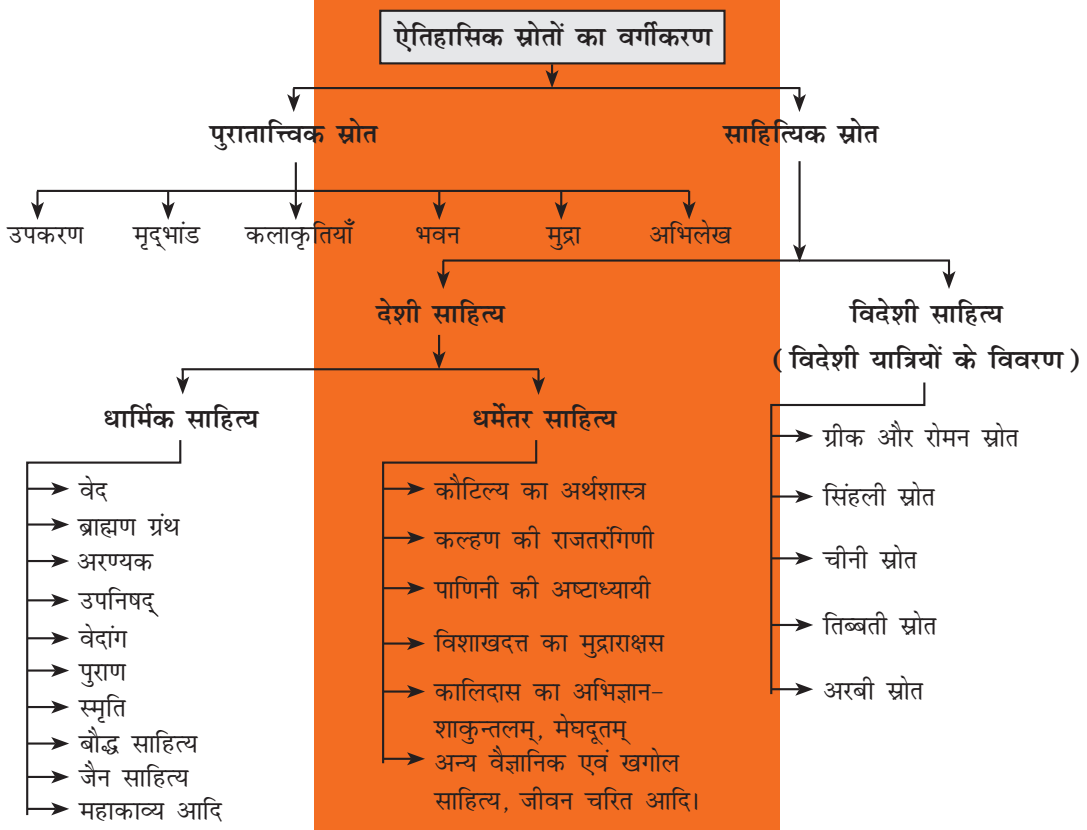

प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय पुरातात्त्विक साक्ष्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। आद्य इतिहास लिखते समय पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार के साधनों का उपयोग होता है तथा ऐतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इन

वृहत्कथामंजरी	क्षेमेंद्र	मौर्यकाल की जानकारी प्राप्त होती है।
अर्थशास्त्र	कौटिल्य (विष्णुगुप्त)	मौर्यकालीन राजनीतिशास्त्र की पुस्तक।
इंडिका	मेगास्थनीज	मौर्यकालीन जीवन के बारे में।
चरक संहिता	चरक	रोगनाशक एवं रोगनिरोधक औषधियों के विषय में जानकारी।
बुद्धचरित	अश्वघोष	बुद्ध के संघर्षमय जीवन का वर्णन है।
रघुवंशम्	कालिदास	समुद्रगुप्त की विजय का वर्णन।
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	शुंग वंश के बारे में जानकारी।
कुमारसंभवम्	कालिदास	गुप्तकालीन रचना।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	गुप्तकालीन रचना।
दशकुमारचरित	दंडी	गुप्तकालीन समाज का वर्णन।
पंचसिद्धांतिका	वराहमिहिर	वराहमिहिर गुप्तयुगीन खगोलशास्त्री थे। पंचसिद्धांतिका यूनानी ज्योतिर्विद्या पर आधारित है।
वृहतसंहिता	वराहमिहिर	संस्कृत में रचित एक विश्वकोश है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्तकालीन समाज का वर्णन।
हर्षचरित्र	बाणभट्ट	हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन।
विक्रमांकदेवचरित	विल्हण	कल्याणी के परवर्ती चालुक्य नरेश विक्रमादित्य की उपलब्धियों का वर्णन।
पृथ्वीराजरासो	चंदबरदाई	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का वर्णन।
प्रबंध चिंतामणि	मेरुतुंग	गुजरात के शासकों का वर्णन।
राजतरंगिणी	कल्हण	कश्मीर के राजवंश की विस्तृत जानकारी मिलती है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के मुख्यत: तीन स्रोत हैं- **पुरातात्त्विक स्रोत, साहित्यिक स्रोत** तथा **विदेशी यात्रियों के विवरण।**
- अभिलेखों के अध्ययन को **पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी)** कहते हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख हड़प्पा सभ्यता की मुहरों पर मिलते हैं, ये लगभग 2500 ई.पू. के हैं। ये अब तक नहीं पढ़े जा सके हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख जो पढ़े जा चुके हैं वे हैं, ई.पू. तीसरी सदी के **अशोक के शिलालेख।** सर्वप्रथम 1837 में **जेम्स प्रिन्सेप** ने इन्हें पढ़ने में सफलता पाई।
- सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स)** कहते हैं।
- सर्वप्रथम **'भारतवर्ष'** का उल्लेख **हाथीगुम्फा** अभिलेख में हुआ है।
- 1400 ई.पू. के **बोगाजकोई अभिलेख** से वैदिक देवता **इन्द्र, मित्र, वरुण** और **नासत्य** (अश्विनी कुमार) के नाम मिलते हैं।
- मध्य भारत में भागवत् धर्म विकसित होने का प्रमाण यवन राजदूत **'हेलियोडोरस' के बेसनगर (विदिशा) गरुड़ स्तंभ लेख** से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम दुर्भिक्ष की जानकारी देने वाला अभिलेख **सोहगौरा** ताम्रपत्र अभिलेख है।
- भारत पर होने वाले हूण आक्रमण की जानकारी **भीतरी स्तंभ लेख** से प्राप्त होती है।
- सती प्रथा का पहला लिखित साक्ष्य **एरण अभिलेख** (शासन भानुगुप्त) से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों ने किया।
- सर्वप्राचीन भारतीय धर्मग्रंथ **वेद** हैं। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
- सबसे प्राचीन वेद **ऋग्वेद** एवं सबसे बाद का वेद **अथर्ववेद** है।

- भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण **पुराणों में** मिलता है। इनकी संख्या **18** है।
- पुराणों में **मत्स्यपुराण सबसे प्राचीन** एवं **प्रामाणिक** है।
- स्मृतियों में **सबसे प्राचीन** एवं **प्रामाणिक 'मनुस्मृति'** मानी जाती है। यह **शुंग काल** का मानक ग्रंथ है।
- जातक में **बुद्ध के पूर्वजन्म** की कहानी वर्णित है। जैन साहित्य को **आगम** कहा जाता है।
- **'अर्थशास्त्र'** के लेखक **चाणक्य (कौटिल्य)** हैं। इससे मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।
- प्रमुख यूनानी-रोमन लेखकों में **टीसियस**, **हेरोडोटस**, **मेगास्थनीज**, **टॉलमी**, **प्लिनी** आदि हैं।
- हेरोडोटस को **'इतिहास का पिता'** कहा जाता है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक **हिस्टोरिका** में 5वीं शताब्दी ई.पू. के भारत-फारस के संबंधों का वर्णन है।
- टॉलमी ने दूसरी शताब्दी में **'भारत का भूगोल'** नामक पुस्तक लिखी।
- प्रमुख चीनी लेखकों में **फाह्यान**, **संयुगन** (518 ई. में भारत आया) व **ह्वेनसांग** हैं। **ह्वेनसांग** का भ्रमण-वृत्तांत **'सि-यू-की'** नाम से प्रसिद्ध है। ह्वेनसांग ने **हर्षकालीन** समाज, धर्म तथा राजनीति के बारे में वर्णन किया है।
- ह्वेनसांग के अध्ययन के समय नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य **शीलभद्र** थे।
- अरबी लेखकों में **अलबरूनी** (पुस्तक: **किताब-उल-हिन्द**) और **इब्नबतूता** (पुस्तक: **रेहला/रिहूला**) प्रमुख हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित यात्रियों को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिये:
   (i) फाह्यान (ii) अलबरूनी
   (iii) इब्नबतूता (iv) ह्वेनसांग
   कूट:
   (a) iv, iii, i, ii (b) i, iv, ii, iii
   (c) iv, i, ii, iii (d) ii, iii, i, iv
2. अशोक का कौन-सा अभिलेख उत्तराखंड से प्राप्त हुआ है?
   (a) कलसी (b) महास्थान गढ़
   (c) सोपारा (d) गुर्जरा
3. 'पेरीप्लस ऑफ एरीथ्रियन सी' नामक पुस्तक का लेखक कौन है?
   (a) एरियन (b) मेगास्थनीज
   (c) प्लूटो (d) अज्ञात नाविकों का समूह
4. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा इनके नीचे दिये कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिये।

सूची-I (अभिलेख)	सूची-II (शासक)
(a) हाथीगुम्फा अभिलेख	(1) खारवेल
(b) नासिक अभिलेख	(2) गौतमी बलश्री
(c) प्रयाग अभिलेख	(3) समुद्रगुप्त
(d) ऐहोल अभिलेख	(4) पुलकेशिन द्वितीय

कूट:

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	1	2	4	3
(c)	2	1	3	4
(d)	2	1	4	3

5. रघुवंशम् के रचनाकार कौन हैं?
   (a) कल्हण (b) कालिदास
   (c) कामंदक (d) अमर सिंह
6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये तथा इनके नीचे दिये कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिये।

सूची-I (रचना)	सूची-II (रचनाकार)
(a) अष्टाध्यायी	(1) पाणिनी
(b) महाभाष्य	(2) पतंजलि
(c) मुद्राराक्षस	(3) विशाखदत्त
(d) अर्थशास्त्र	(4) कौटिल्य

कूट:

	A	B	C	D
(a)	2	1	3	4
(b)	1	2	3	4
(c)	4	3	2	1
(d)	3	4	2	1

7. वृहत्कथामंजरी के रचनाकार कौन हैं?
   (a) सोमदेव (b) कौटिल्य
   (c) कालिदास (d) क्षेमेंद्र
8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   (a) यूनान और रोम के लेखकों में सबसे प्राचीन टीसियस और हेरोडोटस के वृत्तांत हैं।
   (b) फाह्यान और ह्वेनसांग अरब के यात्री थे, जो गजनबी के साथ भारत आए थे।
   उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2
9. सर्वप्रथम भारतवर्ष का उल्लेख किस अभिलेख में है?
   (a) बोगाजकोई अभिलेख (b) हाथीगुम्फा अभिलेख
   (c) नासिक अभिलेख (d) ऐहोल अभिलेख
10. अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम किसने पढ़ा?
    (a) कनिंघम (b) मार्शल
    (c) जेम्स प्रिंसेप (d) फेयर सर्विस
11. हूण आक्रमण की जानकारी किस अभिलेख से मिलती है?
    (a) भीतरी स्तंभ लेख (b) हाथीगुम्फा अभिलेख
    (c) नासिक अभिलेख (d) ऐहोल अभिलेख
12. भारतीय इतिहास को जानने के साधनों में सम्मिलित तत्त्व है/हैं–
    1. पुरातत्त्व-संबंधी साक्ष्य
    2. साहित्यिक साक्ष्य
    3. विदेशी यात्रियों के विवरण
    कूट:
    (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
13. 'नेचुरल हिस्ट्री' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं?
    (a) टॉलमी (b) मेगास्थनीज
    (c) प्लिनी (d) डाइमेकस

उत्तरमाला

1. (b) 2. (a) 3. (d) 4. (a) 5. (b) 6. (b) 7. (d) 8. (a) 9. (b) 10. (c)
11. (a) 12. (d) 13. (c)

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 20 शब्दों में दीजिये)

(a) ऋग्वेद
(b) कालिदास
(c) मेगास्थनीज
(d) राजतरंगिणी
(e) अभिलेख
(f) प्रागैतिहासिक काल
(g) मृद्भांड
(h) मुद्राराक्षस
(i) पुरालेखशास्त्र
(j) हाथीगुम्फा अभिलेख
(k) ऐहोल अभिलेख
(l) हेरोडोटस

लघु एवं दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50, 125 या 250 शब्दों में दीजिये)

1. इतिहास के पुनर्निर्माण में विभिन्न प्रकार के स्रोतों के सापेक्षिक महत्त्व का विवेचन कीजिये।
2. प्राचीन भारत के अभिलेख किन-किन भाषाओं और लिपियों में पाए जाते हैं?
3. साहित्यिक स्रोतों के साक्ष्यों को अन्य स्रोतों से पुष्टि करना क्यों आवश्यक है?
4. प्राचीन इतिहास के निर्माण में साहित्यिक स्रोतों के योगदान की समीक्षा कीजिये।
5. प्राचीन इतिहास के अध्ययन में विदेशी यात्रियों का विवरण किस प्रकार सहायक हुआ है? समझाइये।

अध्याय
2

पाषाणयुगीन संस्कृति
(Stone Age Culture)

पाषाण युग इतिहास का वह काल है जब मानव का जीवन पत्थरों (पाषाण) पर अत्यधिक आश्रित था। उदाहरण के लिये पत्थरों से शिकार करना, पत्थरों की गुफाओं में शरण लेना, पत्थरों से आग पैदा करना इत्यादि।

2.1 प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास
(Development of the Ancient Indian History)

भारतीय प्रागैतिहासिक काल के इतिहास को उद्घाटित करने का श्रेय **डॉ. प्राइमरोज** नामक एक अंग्रेज़ को जाता है। उन्होंने 1842 ई. में कर्नाटक के **रायचूर** ज़िले में लिंगसुगुर नामक स्थान पर प्रागैतिहासिक औज़ारों (पत्थर के औज़ार, तीर के फलक) की खोज की। प्राचीन भारत के इतिहास के विभिन्न कालों का वर्गीकरण एवं प्रमुख विशेषताएँ नीचे दिये गए चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत की गई हैं–

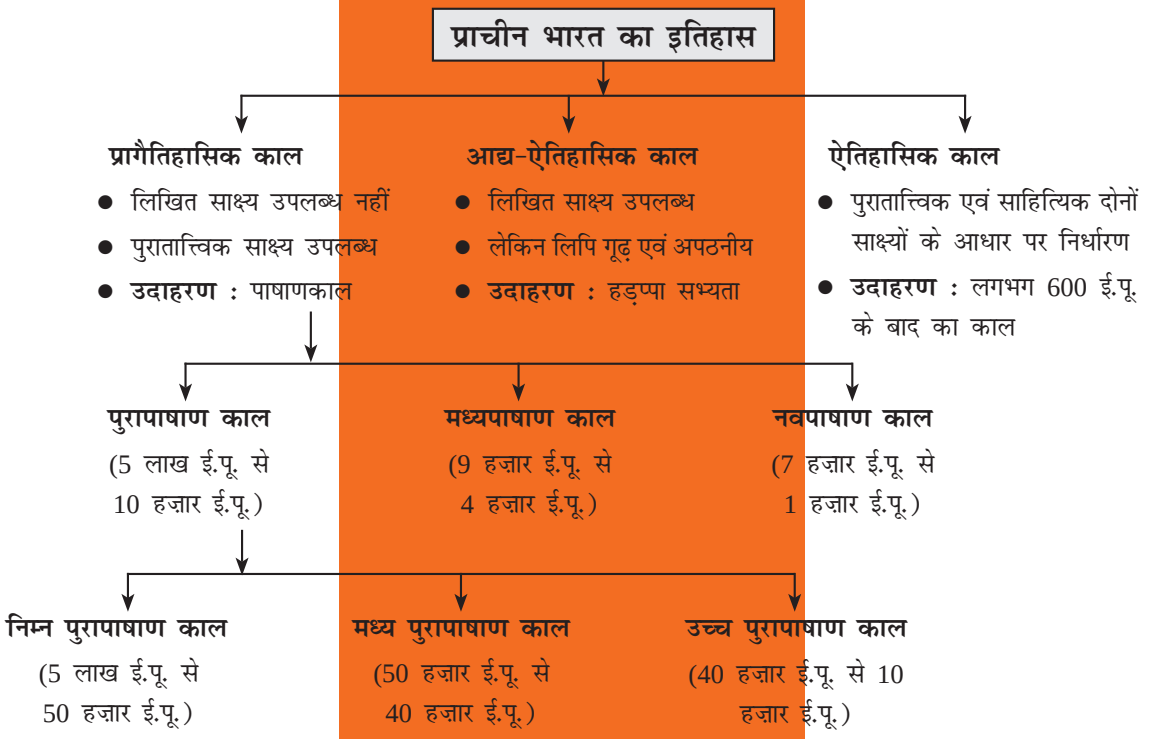

2.2 पुरापाषाण काल : आखेटक और खाद्य संग्राहक
(Palaeolithic Age : Hunter and Food Collector)

पुरापाषाण संस्कृति का उदय अभिनूतन युग (Pleistocene) में हुआ था। इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी। भारतीय पुरापाषाण काल को मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थरों के औज़ारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर निम्न तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है–

अध्याय
3

हड़प्पा सभ्यता
(Harappan Civilization)

हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक थी। यह भारतीय उपमहाद्वीप में प्रथम नगरीय क्रांति को दर्शाती है। इसका क्षेत्रीय विस्तार, नगर-नियोजन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता आदि इसे एक विशिष्ट सभ्यता के रूप में स्थापित करती है। यह **कांस्ययुगीन** सभ्यता थी। कार्बन डेटिंग पद्धति (C_{14}) के आधार पर इस सभ्यता का काल लगभग 2300 ई. पू. –1750 ई. पू. माना जाता है।

3.1 उद्भव एवं विस्तार *(Emergence and Expansion)*

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव *(Emergence of Harappan civilization)*

हड़प्पा सभ्यता का उद्भव ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में हुआ जो वर्तमान में भारत, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में अवस्थित है। विस्तृत खोजों के बावजूद इस सभ्यता के उद्भव तथा विकास के संदर्भ में कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई है। उद्भव की प्रक्रिया को जानने में कई सारी व्यावहारिक समस्याएँ हैं, जैसे- क्षैतिज उत्खनन का न होना, ऊर्ध्वाधर खनन भी जलस्तर के ऊपर तक होना, लिपि का अध्ययन नहीं हो पाना आदि।

इस प्रकार आवश्यक साक्ष्यों का अभाव, जैसे साहित्यिक स्रोतों का अनुपलब्ध होना एवं पुरातात्त्विक स्रोतों द्वारा अपर्याप्त सूचना देना हड़प्पा सभ्यता के उद्भव की व्याख्या में एक बड़ी समस्या है। इस कारण से इस सभ्यता के उद्भव के संबंध में विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किये हैं।

1. विदेशी उत्पत्ति से संबंधित मत

इस मत के प्रतिपादक **मॉर्टिमर व्हीलर** और **गार्डन चाइल्ड** जैसे इतिहासकार हैं। इसके लिये इन्होंने **सांस्कृतिक विसरण** का सिद्धांत प्रयुक्त किया। अन्नागार, गढ़ी तथा बुर्ज में प्रयुक्त शहतीरों के आधार पर मेसोपोटामिया से संबंध जोड़ा जाता है। उसी प्रकार बलूचिस्तान से प्राप्त मिट्टी के ढेरों की तुलना मेसोपोटामिया से प्राप्त जिगुरत (मंदिर) से की गई है। इनका मानना है कि मेसोपोटामिया से नगरीय सभ्यता के गुण भारत पहुँचे, लेकिन पुरातात्त्विक साक्ष्य इसके विपरीत हैं। हड़प्पा नगर-योजना मेसोपोटामिया से कहीं अधिक विकसित थी। हड़प्पा में पकी हुई ईंटों का प्रचुर प्रयोग मिलता है। हड़प्पाई मुहर, लिपि, औज़ार, मृद्भांड आदि मेसोपोटामिया और मिस्र से भिन्न हैं। हड़प्पाई लिपि चित्रात्मक थी तो मेसोपोटामियाई लिपि कीलनुमा।

अतः हड़प्पा सभ्यता की मौलिकता के आधार पर कहा जा सकता है कि इसका उद्भव महज विदेशी प्रेरणा से नहीं हुआ, हालाँकि इस पर विदेशी प्रभाव को पूरी तरह से नकारा भी नहीं जा सकता है।

2. द्रविड़ संस्कृति से संबंधित मत

कुछ विद्वानों का मत है कि आर्यों के आगमन से पूर्व द्रविड़ लोग इस क्षेत्र में निवास करते थे। यहाँ से प्राप्त भूमध्य-सागरीय प्रजाति के कंकालों को **'द्रविड़ों'** से जोड़ा गया है। साथ ही हड़प्पाई लिपि को भी द्रविड़ लिपि से जोड़ा गया है। इसके अलावा धार्मिक क्रियाकलापों, जैसे– लिंग पूजा, आराध्य देव की पूजा, मातृदेवी की पूजा, स्नान का महत्त्व आदि के आधार पर भी हड़प्पा संस्कृति पर द्रविड़ संस्कृति के प्रभाव को दर्शाने का प्रयास किया गया है। लेकिन आर्यों का आक्रमण अनैतिहासिक सिद्ध हो जाने के कारण केवल द्रविड़ संस्कृति से हड़प्पा के जुड़ाव का मत उचित प्रतीत नहीं होता है।

अध्याय
4

वैदिक काल
(Vedic Age)

हड़प्पा सभ्यता के पतन के पश्चात् भारत में जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई, उसके विषय में हमें सम्पूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसीलिये इस काल का नामकरण **"वैदिक काल"** के नाम से हुआ है। वेदों में भी ऋग्वेद सर्वप्राचीन होने के साथ-साथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चूँकि इस संस्कृति के प्रवर्तक आर्य लोग थे, इसलिये इसे कभी-कभी **आर्य सभ्यता या आर्य संस्कृति** का नाम भी दिया जाता है। यहाँ आर्य से अभिप्राय है **श्रेष्ठ, अभिजात, कुलीन** आदि। वैदिक काल अपने-आप में भारतीय इतिहास के लगभग हज़ार वर्ष (1500 ई. पू. –600 ई. पू.) को समेटे हुए है। वैदिक काल का विभाजन ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक काल (1500 ई. पू. –1000 ई. पू.) तथा उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व–600 ई. पू.) के रूप में हुआ है।

4.1 ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. –1000 ई. पू.)
[Rigvedic age (1500 B.C.–1000 B.C.)]

जानकारी के स्रोत *(Sources of information)*

भारत में आर्यों के आरंभिक इतिहास के संबंध में जानकारी का प्रमुख स्रोत **वैदिक साहित्य** है। जो अन्य स्रोत हैं उनमें प्रमुख स्थान पुरातत्त्व का है, जो मात्र साहित्यिक स्रोतों पर आधारित विश्लेषण की पुष्टि करने, परिष्कृत और रूपांतरित करने में सहायक हुआ है।

साहित्यिक स्रोत *(Literary sources)*

ऋग्वैदिक काल की जानकारी का एकमात्र साहित्यिक स्रोत ऋग्वेद है। इसकी रचना अनुमानत: 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. के मध्य मानी जाती है। इसमें 10 मंडल तथा 1028 सूक्त हैं। इसके कुल 10 मंडलों में से 2 से 7 तक प्राचीनतम अंश हैं। प्रथम और दशम मंडल सबसे बाद में जोड़े गए मालूम होते हैं। इस वेद में 'आर्य' शब्द का उल्लेख 36 बार हुआ है। ऋग्वेद की अनेक बातें **अवेस्ता** से मिलती हैं। **अवेस्ता** ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रंथ है। दोनों ग्रंथों में बहुत से देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम भी मिलते-जुलते हैं।

मंडल	रचयिता ऋषि
प्रथम मंडल	ऋषिगण
द्वितीय मंडल	गृत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठम मंडल	भारद्वाज
सप्तम मंडल	वशिष्ठ
अष्टम मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नवम मंडल	ऋषिगण
दशम मंडल	ऋषिगण

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological sources)*

1. **बोगाजकोई अभिलेख या मितन्नी अभिलेख (1400 ई. पू.):**
   इस अभिलेख में हित्ती राजा सुब्बिलिमा और मितन्नी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं– इन्द्र, वरुण, मित्र और नासत्य का उल्लेख है।
2. **कस्सी अभिलेख (1600 ई. पू.):**
   इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि ईरानी आर्यों की एक शाखा का भारत आगमन हुआ।
3. **चित्रित धूसर मृद्भांड (Painted grey wares–P.G.W.)**

अध्याय
5

छठी शताब्दी ई. पू. का काल (महाजनपद काल)
[Era of the Sixth Century B.C. (Mahajanpada Age)]

छठी शताब्दी ई. पू. का काल भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में इस शताब्दी में सभी क्षेत्रों में अपूर्व क्रांतियाँ हुईं और सर्वत्र एक नई चेतना का उदय हुआ। इसी शताब्दी में भारत में राज्यों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई और मगध में साम्राज्यवाद की नींव पड़ी। इस काल से पूर्व का काल राजनैतिक अंतर्विरोधों का काल था। नवीन धर्मों यथा बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का उदय इसी काल में हुआ। आर्थिक दृष्टि से भी यह क्रांति का युग था, फलतः द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया भी इसी काल में सामने आई। लोक भाषाओं का उद्भव तथा सामाजिक-धार्मिक स्थिति में नियमन हेतु **'सूत्र-साहित्य'** की रचना भी इसी काल में हुई। इस बहुमुखी विकास के कारण ही इस काल का भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

5.1 धार्मिक आंदोलन: जैन धर्म व बौद्ध धर्म *(Religious Movement: Jainism and Buddhism)*

ई. पू. छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मध्य गंगा के मैदान में अनेक धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। लगभग सभी धार्मिक संप्रदायों का विरोध धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध था। एक दृष्टि से अगर देखा जाए तो छठी शताब्दी ई. पू. के ऐसे धर्म सुधार आंदोलन की पृष्ठभूमि उत्तर वैदिक काल के अंत तक तैयार हो चुकी थी। तत्कालीन सामाजिक विद्वेष के वातावरण, आर्थिक क्षेत्र में हुए परिवर्तन, धार्मिक आडंबर आदि ने सुधार आंदोलन की भूमिका तैयार की। इस युग के लगभग 62 संप्रदाय (बौद्ध ग्रंथों के अनुसार) ज्ञात हैं, जिनमें बौद्ध धर्म (गौतम), जैन धर्म (महावीर), नियतिवाद (मक्खलि गोशाल) आदि प्रमुख हैं। इनमें से जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए, जिन्होंने अपने उपदेशों तथा कार्यों से समाज को प्रभावित किया। इन्होंने जहाँ वैदिक धर्म की कुरीतियों तथा अतिवादी पंथ की आलोचना की, वहीं सामाजिक समस्या के समाधान का विकल्प भी प्रस्तुत किया। यही कारण है कि इन पंथों की जड़ें भारतीय समाज तथा संस्कृति में गहरे पैठ कर सकीं।

उद्भव के कारण *(Cause of emergence)*

वैदिकोत्तर काल में समाज स्पष्टतः चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) में विभाजित था तथा उनके कर्त्तव्य भी अलग-अलग निर्धारित थे। इस बात पर ज़ोर दिया जाता था कि वर्ण जन्म-मूलक है। ब्राह्मण, जिन्हें पुरोहितों और शिक्षकों का कर्त्तव्य सौंपा गया था, समाज में अपना स्थान सबसे ऊँचा होने का दावा करते थे। वे कई विशेषाधिकारों के दावेदार थे जैसे दान लेना, करों से छुटकारा आदि। वर्णक्रम में क्षत्रियों का स्थान दूसरा था। वे शासन करते थे और किसानों से वसूले गए करों पर जीते थे। वैश्य खेती, पशुपालन और व्यापार करते थे और ये ही मुख्य करदाता थे। शूद्रों का कर्त्तव्य ऊपर के तीन वर्णों की सेवा करना था और उन्हें वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित रखा गया था। शूद्रों को स्वभाव से क्रूर, लोभी कहा गया है और उन्हें कुछ अस्पृश्य भी माना जाता था। वर्ण व्यवस्था में जो जितने ऊँचे वर्ण का होता था, वह उतना ही शुद्ध और सुविधाकारी समझा जाता था।

यह स्वाभाविक ही था कि इस तरह के वर्ण-विभाजन वाले समाज में तनाव पैदा हो। वैश्यों और शूद्रों में इसकी कैसी प्रतिक्रिया थी यह जानने का कोई साधन नहीं है। परंतु क्षत्रिय लोग, जो शासक के रूप में काम करते थे, ब्राह्मणों के धर्म विषयक प्रभुत्व पर प्रबल आपत्ति करते थे। ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों के विरुद्ध क्षत्रियों का खड़ा होना नए धर्मों के उद्भव का एक प्रमुख कारण बना। जैन धर्म के प्रमुख वर्धमान महावीर और बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध दोनों क्षत्रिय वंश के थे और दोनों ने ब्राह्मणों की मान्यता को चुनौती दी।

अध्याय
6

मौर्य साम्राज्य (Maurya Empire)

मौर्य साम्राज्य की जानकारी के लिये हमारे पास साहित्यिक और पुरातात्त्विक दोनों प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। जहाँ साहित्यिक स्रोतों में कौटिल्य का **अर्थशास्त्र**, विशाखदत्त का **मुद्राराक्षस**, मेगास्थनीज की **इंडिका**, बौद्ध साहित्य (दीपवंश, दिव्यावदान), जैन साहित्य और पुराण आदि महत्त्वपूर्ण हैं, वहीं पुरातात्त्विक स्रोतों में **अशोक के अभिलेख** और विभिन्न वस्तुओं के अवशेष जैसे– बर्तन, सिक्के आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

साहित्यिक स्रोत *(Literary sources)*

- **अर्थशास्त्र**– कौटिल्य द्वारा रचित यह पुस्तक मौर्यकालीन **राजनीति और शासन** के बारे में सूचना देती है। कौटिल्य (चाणक्य), चंद्रगुप्त मौर्य (मौर्य वंश का संस्थापक) का **प्रधानमंत्री** था।
- **मुद्राराक्षस**– चंद्रगुप्त मौर्य के शत्रुओं के विरुद्ध चाणक्य ने जो चालें चलीं उनकी विस्तृत कथा **मुद्राराक्षस** नामक नाटक में है जिसकी रचना **विशाखदत्त** ने की है। साथ ही यह पुस्तक चंद्रगुप्त के समय की सामाजिक-आर्थिक दशा पर भी प्रकाश डालती है।
- **इंडिका**– मेगास्थनीज की इंडिका से हमें मौर्यों के विस्तृत प्रशासन तंत्र की सूचना मिलती है। इस पुस्तक से मौर्य काल के प्रशासन, समाज और अर्थव्यवस्था की जानकारी मिलती है। मेगास्थनीज विशेष तौर पर दो शहरों पाटलिपुत्र और तक्षशिला के नगर प्रशासन की चर्चा करता है। पाटलिपुत्र में बुद्धिजीवियों की एक परिषद शासन का प्रबंध देखती थी। यह परिषद नगर श्रेष्ठी (मेयर) का चयन करती थी। प्रशासन के संचालन के लिये अलग-अलग विषयों पर 6 समितियाँ होती थीं। हर समिति में 5–5 सदस्य होते थे। मेगस्थनीज की इंडिका समकालीन भारतीय समाज की भी रोचक जानकारी देती है। उसके अनुसार समाज में 7 वर्ण थे। यद्यपि मेगस्थनीज की यह समझ एक बड़े भटकाव का शिकार नज़र आती है।
- **बौद्ध साहित्य**– दीपवंश अशोक के बौद्ध धर्म को श्रीलंका तक फैलाने की भूमिका के बारे में बताते हैं। अन्य बौद्ध साहित्य (महावंश, दिव्यावदान) तथा जैन साहित्य (कल्पसूत्र, परिशिष्टपर्वन) से भी मौर्य साम्राज्य के विस्तार पर प्रकाश पड़ता है।
- पुराण मौर्य राजाओं और घटनाओं के बारे में बताते हैं।

पुरातात्त्विक स्रोत *(Archaeological sources)*

पुरातात्त्विक स्रोतों में अभिलेखों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें अशोक के अभिलेख, इससे पूर्व चंद्रगुप्त मौर्य के अभिलेख, रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख महत्त्वपूर्ण हैं, जिनमें मौर्यकालीन राजनीतिक, प्रशासनिक, धार्मिक, सामाजिक आदि दशाओं का वर्णन मिलता है।

अशोक पूर्व के अभिलेखों में **सोहगौरा** तथा **महास्थान** का अभिलेख है जो चंद्रगुप्त मौर्य के काल से संबंधित हैं। इससे पता चलता है कि मौर्य काल में दुर्भिक्ष (अकाल) पड़ता था। अशोक के अभिलेखों को हम निम्न तरीके से वर्गीकृत कर सकते हैं–

वृहद् शिलालेख– अशोक के 14 **वृहद् शिलालेखों** से तात्पर्य अशोक के 14 आदेशों से है जो विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। ये स्थान हैं– **कल्सी (देहरादून)**, शाहबाज़गढ़ी, मानसेहरा, गिरनार, धौली, जौगढ़, सोपारा, एर्रगुड्डी, सन्नाती (कर्नाटक)। इसमें धौली और जौगढ़ में दो **पृथक् शिलालेख** भी खुदे हैं। **लघु शिलालेख** गुर्जरा, मास्की, भाब्रु आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं। अशोक के **स्तंभ-लेखों** की संख्या 7 है जो **दिल्ली-टोपरा, दिल्ली-मेरठ** आदि जगहों से प्राप्त हुए हैं। राजकीय घोषणाओं के रूप में कुछ **लघु स्तंभलेख** साँची, कौशाम्बी, सारनाथ, रुम्मिनदेई से भी मिले हैं। बराबर की पहाड़ी में अशोक के गुहालेख भी मिले हैं।

अध्याय
7

मौर्योत्तर काल
(Post–Mauryan Age)

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत की राजनीतिक एकता नष्ट हो गई। मौर्य वंश के पतन और गुप्त वंश के उत्थान के बीच जो पाँच शताब्दियाँ बीतीं, उनमें बहुत राजनीतिक उथल-पुथल हुई। इस काल की राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण है- बहुराज्यीय व्यवस्था। इस व्यवस्था के अंतर्गत उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक एक विशाल मौर्य साम्राज्य की जगह अनेक (छोटे-छोटे) राज्य दिखाई देते हैं। इनमें से कुछ राज्य, जैसे- कुषाण और सातवाहन, साम्राज्य के स्तर पर पहुँच गए और अधिकांश राज्य सीमित स्तर तक ही रहे। बहुराज्यीय व्यवस्था को प्रेरित करने वाले कारकों में प्रमुख थे- मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तराधिकारी राज्यों का उद्भव (उदाहरण के लिये शुंग वंश), विदेशी आक्रमणों के परिणामस्वरूप स्थापित राज्य (उदाहरण के लिये इण्डो-ग्रीक राजवंश, शक, कुषाण आदि), नए क्षेत्रों में राज्य निर्माण इत्यादि।

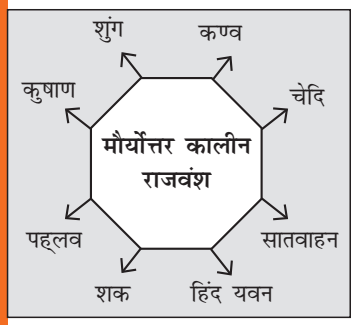

7.1 शुंग वंश, कण्व वंश, चेदि तथा सातवाहन वंश *(Sung Dynasty, Kanva Dynasty, Chedi and Satavahana Dynasty)*

शुंग वंश *(Sung dynasty)*

मौर्यों का उत्तराधिकारी वंश शुंग वंश हुआ। इस वंश का संस्थापक **पुष्यमित्र शुंग** था। उसने अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या कर मगध पर **शुंग वंश** की नींव डाली। उसे ब्राह्मणवंशीय माना जाता है। बौद्ध ग्रंथों में उसे बौद्ध विरोधी सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। एक विवरण के अनुसार अशोक के द्वारा जिन 84 हज़ार स्तूपों का निर्माण कराया गया पुष्यमित्र शुंग ने उन्हें नष्ट कर दिया। किंतु यह महज़ साहित्यिक विवरण है, इस संबंध में पुरातात्त्विक विवरण कुछ और कहते हैं। इनके अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने भरहुत स्तूप का निर्माण करवाया तथा साँची स्तूप में वेदिका स्थापित करवाई।

ऐसा माना जाता है कि पुष्यमित्र शुंग के काल में यवनों का निरंतर आक्रमण हो रहा था। उसने यवनों के विरुद्ध सफलता भी प्राप्त की थी तथा अपनी विजय के उपलक्ष्य में अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कराया था। यवन आक्रमण की चर्चा कालिदास कृत **'मालविकाग्निमित्रम्'**, पतंजलि के **'महाभाष्य'** आदि में मिलती है। लगभग 185 से 75 ई.पू. के बीच शुंग वंश का शासन रहा था। शुंगों की राजधानी **विदिशा** तथा **पाटलिपुत्र** रही थी। पुराणों के अनुसार पुष्यमित्र शुंग के लगभग दस उत्तराधिकारियों ने शासन किया था। उसका निकटस्थ उत्तराधिकारी अग्निमित्र था जिसके सम्मान में कालिदास ने **मालविकाग्निमित्रम्** की रचना की। उसी का एक उत्तराधिकारी **भागभद्र** हुआ जिसके दरबार **(विदिशा)** में यूनानी शासक **एण्टियालकीट्स** ने **हेलियोडोरस** को भेजा था। **हेलियोडोरस** ने ही **वासुदेव कृष्ण** के सम्मान में **विदिशा (बेसनगर)** में **गरुड़ ध्वज** की स्थापना की। इस वंश का अंतिम शासक **देवभूति** था। इसकी हत्या 73 ई.पू. में **वासुदेव** ने कर दी और मगध की गद्दी पर **कण्व वंश** की स्थापना की।

कण्व वंश *(Kanva dynasty)*

अंतिम शुंग शासक देवभूति की हत्या उसके अमात्य वासुदेव ने की। इसकी जानकारी हर्षचरित से प्राप्त होती है। वासुदेव ने जिस नवीन वंश की स्थापना की उसे कण्व वंश के नाम से जाना जाता है। यह भी ब्राह्मण वंश था। कण्व वंश के अंतर्गत चार शासक हुए। वासुदेव, भूमिमित्र, नारायण और सुशर्मन। लगभग 75 ई.पू. से 30 ई.पू. तक कण्व वंश का शासन रहा। पुराणों के अनुसार कण्वों ने 45 वर्षों तक शासन किया। अंतिम शासक **सुशर्मन** की हत्या 30 ई.पू. में **सिमुक** ने कर दी और एक नवीन ब्राह्मण वंश **सातवाहन वंश** की नींव डाली।

अध्याय
8

संगम काल (Sangam Age)

ऐतिहासिक काल के आरंभ में तमिलों के संबंध में जो कुछ जानकारी प्राप्त होती है, उसका स्रोत संगम साहित्य है। 'संगम' से तात्पर्य है **'कवियों का सम्मेलन'** जो संभवत: किसी सामंत या राजा के आश्रय में आयोजित होता था। ऐसे सम्मेलन में रचित साहित्य **संगम साहित्य** के नाम से जाना जाता है। ज्ञात स्रोतों के अनुसार **पाण्ड्य शासकों** के अधीन तमिल क्षेत्र में **तीन संगमों** का आयोजन किया गया।

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक	स्थल
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पाण्ड्य शासक	मदुरा
द्वितीय	तोलकाप्पियर (संस्थापक अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि)	पाण्ड्य शासक	कपाट्पुरम
तृतीय	नक्कीरर	पाण्ड्य शासक	उत्तरी मदुरा

प्रथम संगम, **मदुरा** नामक स्थान पर आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता **अगस्त्य ऋषि** ने की थी। अगस्त्य ऋषि को ही **दक्षिण भारत** में **आर्य संस्कृति के प्रसार** का श्रेय दिया जाता है। इस संगम के सदस्यों की संख्या 549 थी। इन्हें 89 पाण्ड्य शासकों का संरक्षण मिला। प्रथम संगम की कोई रचना उपलब्ध नहीं है। यह संगम सबसे अधिक दिनों तक चला। द्वितीय संगम का आयोजन **कपाट्पुरम** नामक स्थान पर हुआ था जिसके अध्यक्ष प्रारंभ में **अगस्त्य ऋषि** थे, परंतु बाद में उनका स्थान उनके शिष्य **तोलकाप्पियर** ने ले लिया। इस संगम में कुल 49 सदस्य थे। इसे 59 पाण्ड्य शासकों का संरक्षण मिला। इसमें भी अनेक ग्रंथों की रचना हुई किंतु तोलकाप्पियर द्वारा रचित तोलकाप्पियम को छोड़कर शेष सारी रचनाएँ नष्ट हो गईं। उसी प्रकार तृतीय संगम का आयोजन **उत्तरी मदुरा** में हुआ। इसकी **अध्यक्षता नक्कीरर** ने की थी। इसमें 49 सदस्य थे। इन्हें 49 पाण्ड्य राजाओं का संरक्षण मिला तथा कुल 449 कवियों को उनकी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति मिली। ईसा की आठवीं सदी में लिखी गई संगम की तमिल टीकाओं में कहा गया है कि तीनों संगम 9,990 वर्षों तक चलते रहे। उनमें 8,598 कवियों ने भाग लिया और 197 पाण्ड्य राजा उनके संपोषक हुए। प्रथम संगम 4,400 वर्षों तक, द्वितीय संगम 3,700 वर्षों तक एवं तृतीय संगम लगभग 1,850 वर्षों तक चला। इन्हें अतिरंजना मात्र माना गया है, सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि मदुरा में संगम राजाश्रय में आयोजित होते थे। इन सम्मेलनों द्वारा रचित संगम साहित्य जो उपलब्ध है, लगभग 300 ई. और 600 ई. के बीच संकलित किया गया।

संगम साहित्य से हमें तमिल प्रदेश के **तीनों राज्यों चोल, चेर** तथा **पाण्ड्य** का राजनैतिक विवरण मिलता है। उत्तर-पूर्व में चोल, दक्षिण-पश्चिम में चेर तथा दक्षिण-पूर्व और सुदूर दक्षिण में पाण्ड्यों का राज्य स्थित था।

चोल राज्य *(Chola dynasty)*

संगमकालीन तीन प्रधान राज्यों में सर्वप्रथम चोलों का अभ्युदय हुआ। इनका क्षेत्र पेन्नार और वेल्लार नदियों के मध्य स्थित था। इस वंश का राजचिह्न **'बाघ'** था। चोलों की प्रारंभिक राजधानी **उत्तरी मनलूर** थी, लेकिन ऐतिहासिक युग में उरैयूर राजधानी हो गई। कालांतर में **तंजावुर** भी राजधानी बनी। चोल राज्य मध्यकाल के आरंभ में चोलमण्डलम् (कोरोमंडल) कहलाता था। संगमकालीन चोल शासकों में **'करिकाल'** सबसे महत्त्वपूर्ण शासक था। करिकाल ने अपने समकालीन चेर तथा पाण्ड्य राजाओं को परास्त किया तथा कावेरी नदी घाटी में अपनी स्थिति सुदृढ़ की। करिकाल ने श्रीलंका पर भी विजय प्राप्त की। उसने पुहार या **कावेरीपत्तनम्** की स्थापना की और अपनी राजधानी उरैयूर से कावेरीपत्तनम् में स्थानांतरित की। उसने कावेरी नदी के किनारे बांध बनवाया। करिकाल के पश्चात् चोलों की शक्ति निर्बल पड़ने लगी। संगमकालीन चोल शासकों ने तीसरी-चौथी शताब्दी तक शासन किया। नौवीं शताब्दी के मध्य पुन: चोल सत्ता का उत्थान **विजयालय** के नेतृत्व में हुआ।

चेर राज्य *(Chera dynasty)*

चेर या केरल देश पाण्ड्य क्षेत्र के पश्चिम और उत्तर में था। इसमें आधुनिक केरल राज्य का और तमिलनाडु का भाग सम्मिलित था। प्रथम चेर शासक **उदियनजेरल** था। इसका काल लगभग 130 ई. माना जाता है। इसके बाद नेदुनजेरल

अध्याय
9

गुप्त साम्राज्य (Gupta Empire)

तीसरी सदी में उत्तर भारत में कुषाणों तथा दक्कन में सातवाहनों के प्रभुत्व के अवसान के साथ देश में राजनीतिक विघटन का दौर आरंभ हुआ। ज्ञात होता है कि कुषाणों के पतन के पश्चात् उत्तर भारत में सत्ता कुछ समय के लिये मुरुण्डों के हाथों में आई। फिर मुरुण्डों से गुप्तों ने सत्ता ग्रहण की।

संभवत: गुप्त लोग कुषाणों के अधीनस्थ शासक अथवा सामंत रहे थे। उनकी सफलता का महत्त्वपूर्ण कारण वह सैन्य तकनीक थी जो उन्होंने कुषाणों से ग्रहण की। बिहार और उत्तर प्रदेश में अनेकों जगह कुषाण पुरावशेषों के मिलने के ठीक बाद गुप्त पुरावशेष मिले हैं। गुप्तकालीन पुरावशेषों की प्राप्ति की दृष्टि से उत्तर प्रदेश सबसे समृद्ध स्थान सिद्ध होता है। संभवत: वे अपनी सत्ता का केंद्र प्रयाग को बनाकर पड़ोस के इलाकों में फैलते गए। गुप्त वंश के इतिहास की जानकारी के लिये साहित्यिक स्रोत के रूप में पुराण, स्मृतियाँ, बौद्ध ग्रंथ, विशाखदत्त कृत देवीचंद्रगुप्तम् एवं कालिदास की रचनाएँ प्रमुख हैं। पुराण से गुप्त वंश के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी मिलती है। **विशाखदत्त** की रचना **देवीचंद्रगुप्तम्** से गुप्त शासक रामगुप्त एवं चंद्रगुप्त द्वितीय के बारे में जानकारी मिलती है। विदेशी यात्रियों में चीनी यात्री फाह्यान का नाम प्रमुख है जो चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आया था।

पुरातात्त्विक स्रोतों के रूप में समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, चंद्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरी गुहालेख जिससे उसके साम्राज्य विजय का ज्ञान होता है, स्कंदगुप्त के भीतरी स्तंभलेख जिससे हूण आक्रमण की जानकारी मिलती है, आदि प्रमुख हैं।

9.1 प्रारंभिक शासक *(Early Rulers)*

गुप्त राजवंश का प्रथम शासक श्रीगुप्त था। श्रीगुप्त के बाद उसका पुत्र घटोत्कच गुप्त वंश का दूसरा शासक हुआ।

चंद्रगुप्त-प्रथम (319 ई. – 334 ई.) *[Chandragupta–I (319 A.D.–334 A.D.)]*

गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक **चंद्रगुप्त प्रथम** हुआ। वह ऐसा **प्रथम** शासक था जिसने **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की तथा स्वर्ण सिक्के जारी किये। इसके राज्यारोहण (319–320 ई.) के साथ **गुप्त संवत्** का आरंभ माना जाता है।

चंद्रगुप्त प्रथम ने गुप्त साम्राज्य का आरंभिक विस्तार किया, फिर अपनी स्थिति को मज़बूत करने के लिये उसने कूटनीतिक पद्धति का भी सहारा लिया। उसने उत्तर भारत के प्रमुख राज्य **लिच्छवि** की राजकुमारी **कुमार देवी** के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किया। गुप्त संभवत: वैश्य थे इसलिये क्षत्रिय कुल में विवाह करने से उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी।

समुद्रगुप्त के प्रयाग अभिलेख में समुद्रगुप्त को **'लिच्छवि दौहित्र'** अर्थात् लिच्छवि कन्या से उत्पन्न बताया गया है।

समुद्रगुप्त (335 ई.–380 ई.) *[Samudragupta (335 A.D.–380 A.D.)]*

चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी **समुद्रगुप्त** (335–380 ई.) ने गुप्त साम्राज्य का अपार विस्तार किया।

समुद्रगुप्त एक महान साम्राज्यवादी था। उसने कई चरणों में अपना विजय अभियान पूरा किया। समुद्रगुप्त के विजय अभियान को पाँच चरणों में बाँटा जा सकता है। प्रथम चरण में उसने गंगा-यमुना दोआब के राज्यों का समूल नाश किया तथा प्रत्यक्ष रूप से अपने साम्राज्य में मिला लिया। द्वितीय चरण में उसने पंजाब के गणराज्य तथा कुछ सीमावर्ती राज्यों को जीता। जो गणराज्य मौर्य साम्राज्य के खण्डहरों पर टिमटिमा रहे थे उन्हें समुद्रगप्त ने सदा के लिये बुझा दिया। तीसरे चरण में उसने विंध्य क्षेत्र में आटविक राज्यों पर विजय प्राप्त की। फिर चौथे चरण में उसने दक्षिण के बारह राज्यों को जीता। दक्षिण में उसने पल्लवों से अपनी प्रभुसत्ता स्वीकार कराई। अंतिम चरण में उत्तर-पश्चिम में कुछ विदेशी राज्यों को पराजित किया। उसकी बहादुरी एवं युद्ध कौशल के कारण ही **वी.ए. स्मिथ** ने उसे **भारत का नेपोलियन** कहा है। हालाँकि, समुद्रगुप्त की विजयों की सूचना का आधार **हरिषेण** लिखित प्रयाग प्रशस्ति है, यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि हरिषेण एक दरबारी

अध्याय
10

गुप्तोत्तर काल (Post–Gupta Age)

गुप्त वंश के पतन के बाद भारतीय प्रायद्वीप के राजनीतिक इतिहास में नवीन प्रवृत्ति का आविर्भाव हुआ। इस प्रवृत्ति में विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीयता की भावना का प्रादुर्भाव था। 550 ई. के लगभग गुप्त साम्राज्य के विखंडित होने के साथ ही कई सामंतों एवं शासकों ने अपनी स्वतंत्रता घोषित करते हुए नवीन राजवंशों की स्थापना की।

10.1 प्रमुख राजवंश *(Major Dynasty)*

गुप्तोत्तर काल की एक अन्य महत्त्वपूर्ण गतिविधि भारत में इस्लाम धर्म का प्रवेश था जो अरबों के माध्यम से हुआ। हर्षवर्धन के रूप में सशक्त शक्ति के उदय होने तक उत्तरी तथा पश्चिमी भारत की राजनीति में अनेक छोटे-छोटे राजवंशों का उदय हुआ।

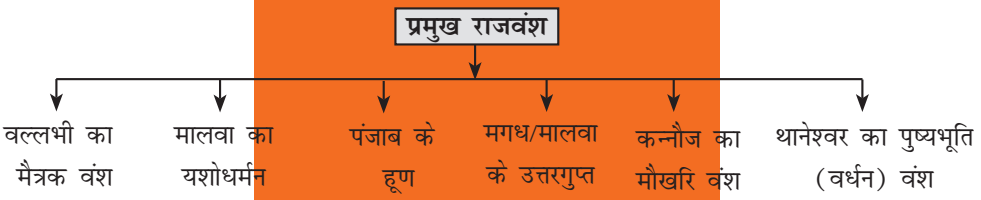

वल्लभी का मैत्रक वंश *(Maitraka dynasty of Vallabhi)*

मैत्रक वंश का उदय गुजरात के वल्लभी में हुआ। इस वंश की स्थापना भट्टार्क नामक गुप्तकालीन सैनिक अधिकारी के द्वारा की गई। इस वंश के शासक बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों ने सौराष्ट्र (काठियावाड़) में शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। भट्टार्क के उत्तराधिकारियों में धरसेन, द्रोणसिंह और ध्रुवसेन प्रमुख शासक थे। इस वंश के शासकों ने अपनी **राजधानी वल्लभी** को बनाया। **ध्रुवसेन द्वितीय** इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। यह हर्षवर्धन का समकालीन था। हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह ध्रुवसेन द्वितीय से कर मैत्रकों से संबंध स्थापित किये। ध्रुवसेन के काल में वल्लभी शिक्षा तथा व्यापार-वाणिज्य का प्रमुख केंद्र था। इसी समय चीनी यात्री ह्वेनसांग ने **वल्लभी की यात्रा** की थी। मैत्रक वंश का अंतिम शासक शिलादित्य था।

वल्लभी विश्वविद्यालय

इतिहास का अवलोकन करने के उपरांत भारत का सबसे पुराना विश्वविद्यालय तक्षशिला तथा सबसे विख्यात विश्वविद्यालय नालंदा को माना जाता है, परंतु वल्लभी विश्वविद्यालय की अपनी अलग पहचान थी। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ के विद्यार्थी प्रशासनिक पदों पर सबसे अधिक नियुक्त होते थे। चीनी यात्री इत्सिंग सातवीं शताब्दी में वल्लभी आए तथा इस शिक्षा केंद्र की प्रशंसा की। यहाँ के आचार्यों में 'गणभूति' और 'स्थिरमति' का नाम उल्लेखनीय है।

मालवा का यशोधर्मन *(Yashodharman of Malwa)*

मालवा के यशोधर्मन राज्य का उदय छठी शताब्दी के आरंभिक काल में हुआ। यशोधर्मन की उपलब्धियों का वर्णन हमें मंदसौर के दो अभिलेखों से प्राप्त होता है। मंदसौर प्रशस्ति यशोधर्मन का चित्रण उत्तर भारत के चक्रवर्ती शासक के रूप में करती है। यशोधर्मन द्वारा हूणों की पराजय उसकी महानतम उपलब्धियों में से एक थी। यशोधर्मन का राज्य पूर्व में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र नदी) से लेकर पश्चिम में समुद्र पर्वत तक विस्तृत था। मंदसौर प्रशस्ति में उसे 'जनेंद्र' कहा गया।

यशोधर्मन का दूसरा नाम विष्णुवर्धन था। उसने राजाधिराज, परमेश्वर और नराधिपति की उपाधि धारण की थी। **वह शिवभक्त था।** अभिलेखों में उसके अच्छे शासन और सद्गुणों के कई उल्लेख हैं। उसकी तुलना मनु, भरत, अलर्क और मांधाता से की गई है। यशोधर्मन ने अपने शिलालेखों में अपने को औलिकरवंशी तथा सूर्यवंशी इक्ष्वाकु का वंशज कहा है। यशोधर्मन के शासन का अंत कब और कैसे हुआ तथा औलिकर वंश में और कौन-से शासक हुए इस संबंध में अभी तक कुछ भी ज्ञात नहीं है। संभवतः यशोधर्मन के पश्चात् दशपुर क्षेत्र पर औलिकरों की राजनीतिक सत्ता कुछ काल तक बनी रही। छठी सदी के प्रारंभ में कलचुरी शंकरगण तथा बाद में मैत्रकों का प्रभाव इस क्षेत्र पर फैलने पर औलिकरों का पतन हो गया।

अध्याय
11

दक्षिण भारत (South India)

प्राचीन भारतीय इतिहास में गुप्तकाल के पतन के बाद राजनीतिक गतिविधियों के केन्द्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। एक ओर मगध जो अभी तक राजनीति का प्रमुख केन्द्र था अब उसकी महत्ता समाप्त हो गई, वहीं दूसरी ओर आगामी 200 वर्षों तक सम्पूर्ण उत्तरी भारत अस्थिर रहा। यद्यपि हर्ष ने कुछ समय तक स्थिरता प्रदान करने का प्रयास किया था, परंतु लगभग 550–750 ई. का काल में राजनीति का केन्द्र दक्षिण भारत हो गया जो दो मुख्य राजवंशों चालुक्य एवं पल्लव का प्रमुख संघर्ष स्थल था।

11.1 चालुक्य वंश *(Chalukya Dynasty)*

चालुक्य वंश प्राचीन दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश था। इस वंश ने 750 ई. तक (लगभग 200 वर्षों तक) दक्षिण भारत के इतिहास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। चालुक्य सातवीं सदी में अपने महत्तम विस्तार के समय में वर्तमान समय के पश्चिमी महाराष्ट्र, दक्षिणी मध्य प्रदेश, तटीय दक्षिणी गुजरात तथा पश्चिमी आंध्र प्रदेश में फैला हुआ था। चालुक्य लोग स्वयं को **ब्रह्मा, मनु या चंद्र के वंशज मानते थे।** अपनी वैधता व प्रतिष्ठा को अर्जित करने के लिये उन्होंने अपने पूर्वजों को अयोध्या का पूर्व शासक भी घोषित किया। आगे चलकर ये चार प्रमुख शाखाओं में बँट गए, जिनमें बादामी (वातापी) के चालुक्य, कल्याणी के चालुक्य (पश्चिम), वेंगी के चालुक्य तथा अन्हिलवाड़ा (लाट) के सोलंकी चालुक्य शामिल थे।

चालुक्यों की उत्पत्ति के संदर्भ में विवाद है। ऐसा माना जाता है कि वे प्रारंभ में कदंब राजाओं की अधीनता में कार्य करते थे। चालुक्यों की मूल शाखा बादामी या वातापी के शासकों ने छठी से आठवीं शताब्दी के मध्य शासन किया, तत्पश्चात् वेंगी व कल्याणी के चालुक्य प्रमुख शक्ति के रूप में उभरे। चालुक्य वंश संस्थापक वैसे तो जयसिंह था, परंतु वास्तविक **संस्थापक पुलकेशिन प्रथम** को माना जाता है। इस वंश का **सबसे शक्तिशाली शासक पुलकेशिन द्वितीय** था। अपने समकालीन पल्लव शासकों से संघर्ष के कारण चालुक्य शासकों की शक्ति क्षीण होने लगी और इनके सामंत शक्तिशाली बनने लगे। ऐसे ही एक सामंत **दंतिदुर्ग** ने वातापी के **चालुक्यों** के **शासन** को **समाप्त कर राष्ट्रकूट राजवंश की नींव डाली।**

सामान्य परिचय (General introduction)
वास्तविक संस्थापक : पुलकेशिन प्रथम (550–567 A.D)
प्रारंभिक राजधानी: बादामी या वातापी (वर्तमान बीजापुर, कर्नाटक)
सबसे शक्तिशाली शासक: पुलकेशिन- II

पुलकेशिन द्वितीय (Pulakeshin–II)
● इसने 609 ईसवी से 642 ई. तक शासन किया।
● उत्तरी कोंकण के मौर्य शासकों, मैसूर के गंग व वेंगी के पल्लवों को पराजित किया।
● कदंब, चोल, केरल, लाट, मालवा व गुर्जर प्रदेशों को जीतकर उत्तर में माही नदी तक अपने राज्य का विस्तार किया।
● नर्मदा तट पर हर्ष को पराजित कर **'परमेश्वर'** की उपाधि धारण की।
● उसने पर्सिया के शासक खुसरो द्वितीय के दरबार में एक दूतमंडल भी भेजा था।
● पुलकेशिन के बाद उसका पुत्र विक्रमादित्य-प्रथम शासक बना।
● इससे संबंधित जानकारी ऐहोल अभिलेख से मिलती है।

चालुक्यों की राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक स्थिति *(Political, economic and social status of Chalukyan)*

राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिति *(Political and administrative status)*

वातापी या बादामी के चालुक्यों ने लगभग दो शताब्दियों तक दक्षिण भारत पर शासन किया। वे मूलतः धर्मनिष्ठ हिन्दू थे और उन्होंने धर्मशास्त्रों के अनुसार शासन किया। प्राचीन शास्त्रों में विहित राजतंत्र प्रणाली इस काल में भी सर्वप्रचलित

अध्याय
12

पूर्व मध्यकालीन भारत (Pre Medieval India)

भारतीय इतिहास में काल विभाजन एक बहुत बड़ी समस्या रही है। सामान्यत: 8वीं से 11वीं शताब्दी के काल को पूर्व मध्यकाल की संज्ञा दी जाती है। राजनीतिक विकेन्द्रीकरण, छोटे-छोटे राज्यों का उदय एवं उनमें आपसी संघर्ष होना जहाँ इस काल की राजनीतिक स्थिति को दर्शाता है, वहीं बंद अर्थव्यवस्था, सामंती सामाजिक जीवन, धर्म में विविधता इस काल की प्रमुख आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक विशेषता थी।

12.1 पाल, गुर्जर-प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश *(Pala, Gurjar–Pratihar and Rashtrakut Dynasty)*

आठवीं से दसवीं शताब्दी तक का समय भारतीय इतिहास में राजसत्ताओं के त्वरित उत्थान-पतन का काल रहा। इस समय उत्तर भारत और दक्कन में कई शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। छठी शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ ही इतिहास के एक महान युग का अंत हो गया। इसके साथ ही 1000 वर्षों से राजनीति का केंद्र रहे मगध का महत्त्व भी हमेशा के लिये समाप्त हो गया। संक्रमण के इस काल में उत्तर भारत में कन्नौज राजनीति के आकर्षण का नया केन्द्र बनकर उभरा। सातवीं सदी में हर्ष के राज्यारोहण के बाद कन्नौज की सत्ता अपने चरम उत्कर्ष पर थी। हर्ष के शासनकाल तक उत्तर भारत की राजनीतिक सत्ता अक्षुण्ण बनी रही, परंतु 647 ई. में हर्ष की मृत्यु के साथ ही उत्तर भारत में राजनीतिक अराजकता पैदा हो गई। इसी पृष्ठभूमि में नए राजवंशों व राज्यों को उदय होने का अवसर मिला।

कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर तीन गुटों में कई वर्षों तक संघर्ष चलता रहा। ये तीन गुट थे- पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट। इनमें से पाल साम्राज्य का नवीं सदी के मध्य तक पूर्वी बंगाल में बोलबाला रहा। पश्चिमी भारत और ऊपरी गंगा की घाटी में दसवीं सदी तक प्रतिहार साम्राज्य की तूती बोलती थी। उधर दक्कन में राष्ट्रकूटों का वर्चस्व था, जो समय-समय पर उत्तर और दक्षिण भारत के प्रदेशों पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते थे। यद्यपि इन तीनों साम्राज्यों के बीच संघर्ष चलता रहा, तथापि इनमें से प्रत्येक ने काफी बड़े-बड़े क्षेत्रों को स्थिरतापूर्ण जीवन की परिस्थितियाँ प्रदान की और साहित्य तथा कला को संरक्षण दिया। तीनों में सबसे दीर्घायु राष्ट्रकूट साम्राज्य साबित हुआ। इस साम्राज्य ने न केवल विपुल शक्ति अर्जित की, बल्कि आर्थिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु का काम भी किया। यहाँ हम पाल, गुर्जर-प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट राजवंशों के विषय में क्रमश: अध्ययन करेंगे।

पाल वंश *(Pala dynasty)*

पाल वंश की स्थापना संभवत: 750 ई. के आस-पास बंगाल (गौड़) में हुई थी। **शशांक** की मृत्यु के पश्चात् लगभग एक शताब्दी तक बंगाल में अराजकता और अव्यवस्था का माहौल बना हुआ था। उस क्षेत्र में फैली अराजकता से तंग आकर वहाँ के प्रमुख लोगों ने **गोपाल** को शासक चुना। यह पहला राजा था, जिसका जनता के द्वारा निर्वाचन हुआ। उसने गौड़ में फिर से सुव्यवस्था स्थापित की तथा करीब दो दशकों तक शासन किया। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था तथा उसने ओदंतपुरी महाविहार की स्थापना भी की थी। 770 ई. में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र **धर्मपाल** राजा बना।

धर्मपाल ने बंगाल पर 770 से 810 ई. तक शासन किया। उसने सर्वप्रथम राज्य का विस्तार किया। कुछ समय के लिये उसने कन्नौज पर भी अपना अधिकार स्थापित किया था तथा उसने **'उत्तरापथस्वामिन्'** की उपाधि धारण की। वह बौद्ध धर्मानुयायी था, किंतु वह अन्य धर्मों के प्रति भी सहिष्णु था। बिहार और आधुनिक पूर्वी उत्तर प्रदेश पर अपना-अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिये पालों और प्रतिहारों के मध्य संघर्ष चलता रहा, यद्यपि बंगाल के साथ-साथ बिहार पर पालों का ही अधिक समय तक नियंत्रण कायम रहा।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456